

‘प्रशासन में आध्यात्मिकता द्वारा शांति एवं स्थिरता’ के विषय पर प्रशासकों के महासम्मेलन का संक्षिप्त समाचार

एकेडेमी फॉर ए बेटर वर्ल्ड, ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत में 8 से 12 जून, 2009 के दौरान प्रशासकों के लिए ‘प्रशासन में आध्यात्मिकता द्वारा शांति एवं स्थिरता’ के विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें नेपाल एवं भारत के विभिन्न राज्यों से प्रशासनिक क्षेत्र के संलग्न लगभग 500 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मनमोहक प्राकृतिक पर्यावरण से भरपूर और आध्यात्मिक वातावरण में सभी ने स्व-प्रशासन की कला और सुप्रशासन की नई दिशा प्राप्त की।

इस महासम्मेलन में स्वागत सत्र, ‘प्रशासन में आध्यात्मिकता द्वारा शांति एवं स्थिरता’ के विषय पर उद्घाटन सत्र, ‘स्वच्छ विचारधारा एवं निर्णय शक्ति’ के विषय पर चार सेमिनार, ‘स्व-सम्मान का निर्माण’ के विषय पर तीन सेमिनार ‘अहंकार एवं क्रोध पर विजय’ के विषय पर खुला सत्र, प्रश्न-मंच, तथा ‘प्रशासन एवं जीवन में चुनौतियों पर विजय’ के विषय पर सन्मुख वार्तालाप सत्र और ‘प्रशासन में शांति एवं स्थिरता की कार्ययोजना’ के विषय पर समापन सत्र तथा चार चिंतन सत्रों का आयोजन किया गया। इन सत्रों में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका आदरणीया राजयोगिनी दादी जानकी जी, संयुक्त प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी, नेपाल एवं भारत के विभिन्न प्रान्तों से कई विद्वान एवं अनुभवी वक्ताओं ने अमूल्य विचार प्रस्तुत किये। इसके अनुसंधान में प्रशासकों, कार्यपालकों तथा प्रबन्धकों के लिए कार्ययोजना भी तैयार की गई है, जो प्रशासनिक क्षेत्र से सम्बन्धित महानुभावों को प्रशासन में बहुत ही उपयोगी होगी और नये प्रशासन के लिए नई दिशा-निर्देश मिलेंगे। इस सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का समाचार तथा कार्य-योजना के बिन्दु निम्नलिखित है।

उद्घाटन सत्र:-

महासम्मेलन की अध्यक्ष और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका, आदरणीया राजयोगिनी दादी जानकी जी ने अध्यक्षीय प्रवचन में कहा कि, नकारात्मकता ज़हर है, सकारात्मकता अमृत है। जीव में सकारात्मकता के अमृत की जरूरत है, जो राजयोग के गहन अभ्यास से प्राप्त कर सकते हैं। परम श्रद्धेय दादी जी ने राजयोग की वरदानि अनुभूती कराई।

सम्माननीय मेहमान भ्राता राकेश मेहता, आई.ए.एस., मुख्य सचिव, दिल्ली सरकार, दिल्ली ने प्रवचन में कहा कि शान्ति और हिंसा एक-दूसरों से विरोधाभासी है। हत्या, बलात्कार जैसी घटनाओं से समाज में अस्थिरता और नकारात्मकता फैलती है। इसको आध्यात्मिकता से ही रोका जा सकता है।

भ्राता डॉ. एम. नटराजन, साइन्टीफीक एडवाज़र, डिफेन्स मिनिस्टर, डी.आर.डी.ओ., दिल्ली ने प्रवचन में कहा कि, प्रशासकों को तनाव मुक्त प्रशासन करने के लिए आध्यात्मिकता के

अभ्यास की जरूरत है। इससे प्रशासन में स्थिरता और शांति का वातावरण बन सकता है।

भ्राता डॉ. डबल्यु. सेल्वामूर्ति, चीफ कन्ट्रोलर, आर.एण्ड डी. (एल.एस. एण्ड एच.आर.), डी.आर.डी.ओ., नई दिल्ली ने प्रवचन में कहा कि, आत्म-अनुभूति से ही व्यक्ति अपनी कमजोरियों को और विकारों को दूर कर सकता है। इससे प्रशासक अपनी प्रशासनिक कार्यक्षमता को बढ़ा सकता है।

भ्राता सीताराम मीना, आई.ए.एस. लेबर कमिश्नर, यु.पी. कानपुर ने प्रेरक प्रवचन में कहा कि, व्यवहारिक जीव में धैर्यता जरूरी है। कभी-कभी व्यक्तियों के बीच शाब्दिक युद्ध हो जाता है, जो हिंसा के रूप में परिवर्तन हो जाता है। राजयोग चिंतन से ही अहंकार जैसे विकारों पर विजय पा सकते हैं।

राजयोगी ब्रह्माकुमार ब्रिज मोहन जी, अध्यक्ष, राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग, दिल्ली ने मुख्य वक्तव्य में कहा कि स्व-अनुशासन की जरूरत है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे 5 विकारों के वशीभूत होने से व्यक्ति भूले करता है। इसलिए इन विकारों पर विजय प्राप्त करने से प्रशासकों की कार्यक्षमता बढ़ेगी।

राजयोगी ब्रह्माकुमार मृत्युंजय जी, व्यवस्थापक सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, आबू पर्वत ने प्रेरणादायी सम्बोधन में कहा कि, व्यक्ति आज के जीवन में आध्यात्मिकता से ही अपने आपको राजयोग चिंतन, स्व की असली अनुभूति से शक्तिशाली बना सकता है। तब ही प्रशासक तनावपूर्ण परिस्थितियों में कार्य कर सकता है।

ब्रह्माकुमारी आशा बहन, राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग तथा ओम् शान्ति रीट्रीट सेन्टर की निदेशिका ने सम्मेलन के सन्दर्भ में बताते हुए कहा कि, अहंकार और क्रोध ही स्व-उन्नति में विघ्नरूप हैं, जो व्यक्तियों को एक-दूसरे से दूर करते हैं। प्रशासकों को स्नेह और मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना है, इसके लिए आध्यात्मिक शिक्षा जरूरी है।

ब्रह्माकुमार हरीश भाई, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग, आबू पर्वत ने सम्मेलन में पधारे भारत एवं नेपाल के सभी भाग लेने वाले प्रशासकों का बहुत ही सुन्दर शब्दों से स्वागत किया तथा प्रभाग की सेवाओं की जानकारी देते हुए बताया कि, इस प्रभाग द्वारा भारत तथा नेपाल में प्रशासकों की आध्यात्मिक सेवायें करने के लिए अनेकविध कार्यक्रमों जैसे कि सम्मेलन, डायलॉग, सेमिनार तथा ट्रेनिंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। अनेक बड़ी कम्पनियों में विविध टॉपिक्स पर ट्रेनिंग के कार्यक्रम रखे जाते हैं।

ब्रह्माकुमारी उर्मिल बहन, क्षेत्रिय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग, दिल्ली - पालमविहार ने कुशलतापूर्वक सत्र का संचालन किया। **कुमारी आकृति**, सिंगरौली ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया।

सम्मेलन के अन्य सत्रों का समाचार बाद में ई-मेल से भेजा जायेगा।

ओम् शान्ति।

प्रशासकों, कार्यपालकों तथा प्रबन्धकों के लिए कार्य-योजना के बिन्दु

- (1) आध्यात्मिकता के माध्यम से ही प्रशासन में सुख, शांति, स्थिरता और संतुष्टतायुक्त प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण करेंगे।
- (2) आध्यात्मिकता से सम्पन्न और दिव्य गुणों से भरपूर प्रशासन करने की कला का विकास स्वयं में करेंगे।
- (3) स्वच्छ, सरल और पारदर्शी प्रशासन के लिए आध्यात्मिकता की युक्तियों का प्रयोग करेंगे।
- (4) स्वस्थ, समृद्ध और सुख-शांतिमय जीवन जीने के लिए आध्यात्मिकता को अपनायेंगे।
- (5) व्यक्तिगत जीवन में तथा प्रशासनिक व्यवहारों में स्नेह (Love) एवं नियमों (Law) का सन्तुलन रखकर अनेक प्रकार के परिबलों के बीच समस्याओं का समाधान करेंगे।
- (6) अपने दैनिक जीवन व प्रशासन में राजयोग का अभ्यास अवश्य करेंगे।
- (7) प्रशासन में वर्तमान व भविष्य की विविध चुनौतियों को निपटने के लिए आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनायेंगे।
- (8) नया प्रशासन, नया भारत और नया विश्व का नव-निर्माण करने में एक प्रशासक के रूप में अब हमारी आध्यात्मिक भूमिका रहेगी।
- (9) स्व का आध्यात्मिक परिचय और स्व शासन के माध्यम से उत्तम प्रशासन करेंगे।

- (10) स्वच्छ विचार शक्ति, परखने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति जैसी अष्ट शक्तियों का विकास स्वयं में करके श्रेष्ठ प्रशासन करेंगे।
- (11) सुन्दर जीवन और सुप्रशासन के स्थायी शत्रु अहम् और क्रोध जैसे विकारों पर विजय पाकर प्रशासन व जीवन को सरल और सफल बनायेंगे।
- (12) विश्व के सर्वोत्तम प्रशासक परमपिता परमात्मा का परिचय प्राप्त करके उनसे प्राप्त शक्तियों, गुणों से सुप्रशासन करेंगे।
- (13) आध्यात्मिक शक्तियां व राजयोग का ज्ञान सिर्फ जानने हेतु नहीं लेकिन जीवन में उतारकर अपना और दूसरों का जीवन सुंदर, मधुर और शक्ति सम्पन्न, जीते जागते आदर्श (role model) बनने का दृढ़ संकल्प करते हैं और इसको पूर्ण करेंगे।
- (14) केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार तथा स्थानिक स्वराज्य की संस्थाओं की योजनाओं को कार्यान्वित करने में आध्यात्मिकता का योगदान रहे, इसके लिए प्रशासक सेवा प्रभाग तथा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को ज्यादा से ज्यादा विविध क्षेत्रों में सहभागी बनाकर सरकार और प्रजा के सशक्तिकरण में योगदान देंगे।
- (15) स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन ही हमारा मुख्य लक्ष्य रहेगा।
- (16) प्रशासन किसी भी संस्कृति, समाज व राष्ट्र का बेकबोन है, इसलिए वर्तमान समय के प्रशासन में परिवर्तन लाना जरूरी है। इस कार्ययोजना द्वारा प्रशासन में आध्यात्मिक क्रान्ति लायेंगे इससे दिव्य व्यक्तियों का, दिव्य समाज का, दिव्य राष्ट्र का और दिव्य दुनिया का निर्माण करने में हम सहयोगी बनेंगे।

ओम् शान्ति।

ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत में 8 से 12 जून, 2009 के दौरान

‘प्रशासन में आध्यात्मिकता द्वारा शांति एवं स्थिरता’ के विषय पर आयोजित महासम्मेलन के उपलक्ष में आदरणीया दादी जानकी जी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज की प्रशासकों, कार्यपालकों एवं प्रबन्धकों के प्रति आध्यात्मिक प्रेरणाएं

◆ **आध्यात्मिकता माना क्या? शांति एवं स्थिरता कैसे आ सकती है?**

पहले अपने आपको और परमपिता परमात्मा को समझना है और अपने आपको चलाना है। परमात्मा से गुप्त सहयोग लेना है, तब ही स्थिरता (Stability) और शांति (Peace) आ सकती है।

◆ **अन्तर्मुखता, एकाग्रता द्वारा अहंकार से मुक्ति कैसे मिलती है?**

आध्यात्मिक ज्ञान से अच्छी तरह से समझ (understanding) आती है। बिना अन्तर्मुखता से सत्यता, नम्रता, गम्भीरता, धैर्यता, दिव्यता प्रेक्टीकली दिखाई पडती है। ‘मैं’ को अन्दर से जानना शुरू करें ... जब मैं (आत्मा) को देखते, तो स्वमान में रहने की सीट मिलेगी। मैं (आत्मा) को जानने से अहंकार, देह अभिमान से परे हो जाते हैं।

◆ **शांति की शक्ति से स्थिरता कैसे आती है?**

ब्रह्माकुमारीज संस्था के साकार संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा, प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती, द्वितीय मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि, अतिरिक्त प्रशासिका मनमोहिनी दीदी ने कैसे स्वमान में रहकर सच्चे दिल से सम्मान देकर अनेकों को सहयोगी बनाया है। परमपिता परमात्मा से प्राप्ति करने वाला ही विश्व-कल्याण के लिए निमित्त बन सकता है। शांति की शक्ति (Silence-Power) अन्दर से कार्य करती है। इससे असम्भव बात भी सम्भव हो जाती है। शांति (Silence) में रहने से स्थिरता (Stability) आ जाती है। शांति ईश्वर की देन है। साइलेन्स से ही सर्वशक्तिमान (Almighty) परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध (Relation), योग (Connection), वार्तालाप (Communication) करने से हमारी कमजोरी अन्दर से खत्म हो जाती है और सफलता मिलती है। स्थिरता से जीवन-मूल्य (Values) का उपयोग करना आसान हो जाता है। बुद्धि स्थिर होती है, तब शक्ति (Energy) मिलती है। बुद्धि की स्थिरता से शांति और स्नेहपूर्ण रह सकते हैं। इससे आंतरिक शक्ति बढ़ती है।

◆ **कमलफूल समान न्यारा और प्यारा कैसे बन सकते हैं?**

स्वाभाविक रूप में निमित्त भाव में रहना है। निमित्त बनने से न्यारा सहज हो सकते हैं। अपने को न्यारापन में रखना ही समझदारी है। आध्यात्मिकता का प्रेक्टिकल लाइफ में सबूत हो। अनेक आत्माओं का सहारा बनो, साथी-सहयोगी बनो।

ओम् शान्ति।